Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

ॐ

मोक्ष

9-5-2014
शुक्रवार
(बाबा धाम)

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार — — —

सामान्य तह
मोक्ष से अर्थ लगाया जाता है, की मृत्यु के बाद प्राप्त होने वाली "मुक्त अवस्था" आत्मा तो मुक्त ही है, तो मृत्यु के बाद वह क्या मुक्त होगा जो कुछ मुक्त होना है, वह है, शरीर के "कर्म" और शरीर के "विकार" और इन सब का संमन्ध जिवन के साथ ही है, याने जो कुछ "मुक्त अवस्था" पाना है, वह इसी जिवन मे ही पाना है, वास्तव मे प्रत्येक मनुष्य के जिवन का एक ही लक्ष्य होता है, वह है, "मोक्ष" को प्राप्त करना वास्तव मे जिवन का एकमात्र लक्ष्य होता है, मोक्ष की प्राप्ती अगर सचमुच कोई मनुष्य इसी लक्ष्य को सामने रख कर अपना जिवन व्यतीत करे तो उसका समुचा जिवन ही सुखमय हो जायेगा,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

वास्तव मे "मोक्ष" का लक्ष्य जिवन मे इसी लीये दिया जाता है। ताकी आपका जिवन सुखमय हो सके। वास्तव मे मोक्ष का लक्ष्य सुखमय जिवन की "कुंजी" है। आईये हम जाने की मोक्ष का लक्ष्य हमारे जिवन को कैसे सुखमय कर सकता है।

प्रथम तो हम जाने की जीवन मे सुखः और दुखः दोनो ही आते और जाते है, लेकीन मनुष्य का स्वभाव है, की वह दुखः के क्षणो को अधीक याद रखता है। और अपने आप को अधीक दुखीः कर लेता है, अब दुखः और सुख इसके उपर की स्थिती ध्यान है। क्योकी ध्यान करने से एक साक्षी भाव आ जाता है, फीर न मनुष्य दुखीः होता है, और न सुखी होता है। क्योकी यह तो दोनो मन की दशा है। ध्यान आत्मा का भाव को बढाता है। आत्मा न तो दुखीः होती है, और न सुखी होती है। और मोक्ष का लक्ष्य सामने हो तो मनुष्य अपना जिवन ही "आत्मभाव" मे गुजारता है,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

जिस प्रकार से एक विद्यार्थी गणित मे १०० मे १०० अंक लाने का लक्ष्य रखता है, और फीर अपने प्रयत्न भी उसी प्रकार से करता है। "मोक्ष" पाने का लक्ष्य भी ऐसा ही है।

"मोक्ष" ध्यान की एक उच्च अवस्था है। वह पाने के प्रयासरत साधक का सारा जिवन ही "संतुलीत" और "सुखमय" हो जाता है। साधक अपने जिवन मे ही एक "समाधान" का अनुभव करता है, वह "समाधान" भितर का होता है, इस लीये स्थायी होता है, इस आधार पर हम कह सकते है, की मोक्ष जिवन का वह लक्ष्य है। जो लक्ष्य जिवन मे रखने पर सारा जिवन ही सुख और समाधान के साथ ही बितता है, यह लक्ष्य हमारे भितर "आत्मभाव" को वृद्धीगत करता है। और मनुष्य मे आत्मभाव बढने पर शरीर का भाव कम हो जाता है। और जिवन की सारी समस्याऐ सारे विकार भी इसी शरीर से ही संमन्धीत होते है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road,Near Gandhi Smiriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450, India. Phone: 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

इस प्रकार से शरीर मोक्ष की स्थिती पाने का "एक लक्ष्य साधक" बन जाता है। और हम हमारे जिवन का। और इस मनुष्य जन्म का सार्थक कर पाते है।

आज मेरे वैवाहिक जिवन के 30 साल पुर्ण हो रहे है। उसी जिवन का "अनुभव" आज आपको बांटने की इच्छा हुयी और यह "संदेश" लीखा है, यह मेरे 50 साल की "साधना" का सार है, आप सभी को खुब खुब आशिर्वाद.

आपका
बाबा स्वामी
9/5/2014